कथाकार संजीव की कहानी पापी का शेष भाग।
कई पाठकों ने इस कहानी का अन्त लिखा है।
कुछ अन्त अच्छे थे पर, बेहद लम्बे थे।
चुनिन्दा अन्त यहाँ प्रस्तुत हैं :

परेशान रामलुभाया ने आगे क्या किया होगा? क्या वह वापिस गाँव लौट गया होगा?

तभी अचानक उन्हें लोगों का एक हुजूम अपनी ओर आता दिखा।

पास आने पर उन्हें हैरानी हुई ये तो उनके अपने ही गाँव के लोग हैं – आगे-आगे चला आ रहा था करतार, पीछे-पीछे शर्माजी, पण्डितजी, त्यागी जी, चौधरी जी और ढेर सारी गाँव की औरतें। क्या माजरा है? क्या यहाँ भी उन्हें रहने नहीं देंगे गाँव वाले? लेकिन आश्चर्य! करतार आते ही रामलुभाया के कदमों पर गिरकर फफककर रोने लगा, "करे कोई, भरे कोई! चोरी मैंने की थी चाचा! सज़ा तुम भोग रहे हो।"

रामलुभाया और दूलो हैरान थे। शर्माजी ने आगे बढ़कर हाथ जोड़ते हुए कहा, "करतार के बताने पर हमने जाना कि तुम निर्दोष हो रामलुभाया।"

"लेकिन आपके आचार्य जी, ओझा, गुनी, भेदिया सब तो मेरा ही नाम ले रहे थे।" रामलुभाया ने कहा।

"सब झूठे और फरेबी है। हम मूरख लोग इनके झाँसे में आ जाते हैं।"

"मेरा बेटा दीपक पोखर में डूब गया। कोई बचाने नहीं आया। कहा कि भगवान ने न्याय किया है।" दूलो ने भरे गले से कहा।

"अब हमें और लज्जित न करो। हम सबने तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया है। मेरी कोई क्षमा नहीं। आप नहीं लौटेंगे तो मैं यहीं सिर पटक-पटक कर जान दे दूँगा। मैं पापी हूँ।" करतार ने कहा।

तुम्हीं नहीं हम सब पापी हैं। समूचे इस्माइलपुर ने एक स्वर से स्वीकारा।

रात को रामलुभाया के फुफेरे भाई नत्थूलाल घर लौटे। जब से एक फिल्मी डायलॉग "मूँछें हो तो नत्थूलाल जैसी" सुपरहिट हुआ था, उनके भरे हुए चेहरे पर विराजमान मोटी-मोटी मूँछों की महिमा अचानक बढ़ गई थी। रामलुभाया का लुटा-पिटा चेहरा देखकर नत्थूलाल समझ गए कि कुछ गलत हुआ है। रामलुभाया ने भरे गले से अपनी आपबीती नत्थूलाल को सुनाई और सुबकने लगे। पूरा किस्सा सुनकर नत्थूलाल मुस्कुराने लगे। उन्होंने रामलुभाया से सांत्वना का एक शब्द भी नहीं कहा। यह देखकर रामलुभाया और दुखी हो गए। और मन ही मन तय कर लिया कि सुबह होते ही यहाँ से चले जाएँगे।

उधर इस्माइलपुर में एकदम तड़के लोग लोटा लेकर दिशा-मैदान के लिए जा रहे थे। तभी एक जीप धूल उड़ाती हुई गाँव में घुसी। जीप से छह सिपाही उतरे। चार सोनीपत से सामान लाकर बेचने वाले करतारसिंह और भूतेन्दरसिंह के घर में घुसे। बचे दो ने दिशा-मैदान से लौटकर लोटा माँज रहे आचार्य जी को धर दबोचा। अवाक गाँववालों ने देखा कि पुलिसवालों ने आचार्य जी, करतार और भूतेन्दर को धकियाते हुए जीप में पटक दिया है। ड्राइवर ने जीप स्टार्ट की और धूल उड़ाती हुई सोनीपत की तरफ रवाना हो गई।

धूल का गुबार हटा तो गाँववालों ने देखा कि एक पुलिसवाला तो यहीं रह गया है। ये नत्थूलाल थे। इस तमाशे को देख रहे सारे गाँववाले नत्थूलाल के चारों ओर आ जुटे। नत्थूलाल ने जो बताया उसे सुनकर सारे गाँववाले चकराकर रह गए। किस्सा यह था कि करतारसिंह और भूतेन्दरसिंह जो सामान लाकर बेचते थे वह चोरी किया गया होता था। आचार्यजी को पता था कि वे चोरी करते हैं। उन्होंने ही दोनों को बताया था कि जगत शर्मा के घर हाथ साफ करने का अच्छा मौका है। क्योंकि वो अपनी भांजीकी शादी में दूसरे गाँव गए हुए हैं।

पूरा किस्सा सुनकर चकराए हुए गाँववालों को इस बात काबहुत दुख हुआ कि उन्होंने रामलुभाया के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है। ईशान अली ने बेचैनी से पूछा, "रामलुभाया कहाँ हैं? मैं पूरे गाँव की तरफ से माफी माँगकर उनको वापिस लाऊँगा।" नत्थूलाल के बताने पर उन्होंने त्यागी को लोटा थमाते हुए कहा, "यह मेरे घर दे देना। मैं रामलुभायाजी को लिवाने जा रहा हूँ।"

– चन्दन यादव

रामलुभाया मन ही मन घुलता रहता। रातों को सोता मगर आँखों में नींद कहाँ? दुख में भी चाँदनी रातें आती हैं। बुरे दिनों में भी सुहानी हवाएँ चलती हैं। यह और बात है कि दुखिया के लिए चाँदनी में सुन्दरता का कोई अर्थ नहीं। हवा के सुहानेपन से उसे कोई लेना-देना नहीं। वह तारों को ताकता रहता। उसके बुदबुदाते हुए होंठ तारों से पूछते, "धरती पर कहाँ क्या चल रहा है तुम तो सब कुछ देखते हो। तुम बताओ क्या मैंने चोरी की है?" मगर तारे किसी चमकीले लाल पत्थर की तरह अँधेरे में चमकते भर रहते, कहते कुछ भी नहीं।

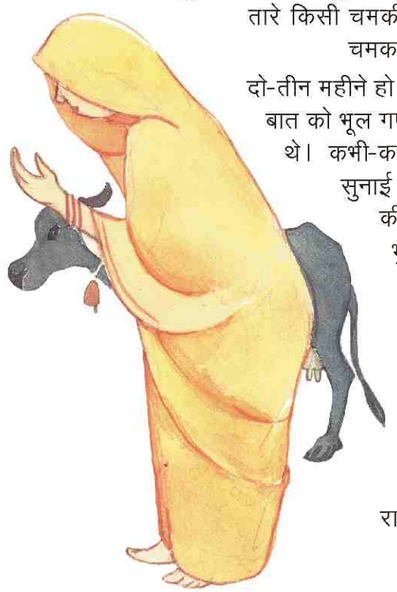

दो-तीन महीने हो गए। इस्माइलपुर के लोग चोरी की बात को भूल गए। लेकिन रामलुभाया को नहीं भूले थे। कभी-कभी कहीं-कहीं ऐसी बातें चलती सुनाई दे जाती थीं, "पता नहीं उसने चोरी की थी या नहीं? पर बेचारा सज़ा भुगत रहा है।"

इधर रामलुभाया शरीर से निढाल हो गया। उसकी आवाज़ का दम जाता रहा। एक रात पत्नी दूलो ने देखा कि रामलुभाया आँगन के खटोले में नहीं है। वह एकाएक घबरा गई कि कहीं...। तभी उसे गाय से बातें करता रामलुभाया दिखाई दे गया, "अब जब मैंने चोरी नहीं की तो हमें अपने गाँव में हीक्यों नहीं रहना चाहिए बताओ। अच्छा तुम बताओ, तुम यहाँ रहना चाहती हो? दूलो भी नहीं रहना चाहती।" उसने भैंस से भी यही बात पूछी। उसके पूछते ही भैंस के गले की घण्टी से टन-टन की आवाज़ आई। पता नहीं क्या हुआ कि रामलुभाया चेहरे पर दोनों हाथ रखकर फफक पड़ा। पत्नी दूलो दौड़कर आई। उसने सम्हालते हुए रामलुभाया को उठाया और खटोले तक लेकर आई। दूलो की छाती बँध आई थी। वह रुँधे कण्ठ से चीखी, "मैं कहती हूँ तुमने नहीं की चोरी। और अब हम रहेंगे अपने गाँव में ही, समझे कि नहीं रामलुभाया जी।" रामलुभाया ने हामी में गर्दन नीचे झुका ली।

– प्रभात

पहेलियाँ

ऊपर वाले दाँतों ने नीचे वाले दाँतों से क्या कहा?

खींचा घुमाया रगड़ा
फूल खिला
लेकिन जल्दी मुरझा गया

दो आदमियों ने नदी में गोता लगाया
एक के बाल भीगे
एक के नहीं

किसी ने तकिए के नीचे शक्कर क्यों रखी?

लंच पे मिलेंगे
माचिस की तीली
वो गंजा था
ताकि मीठे सपने आएँ